पशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ और दामोदरकुण्ड (नेपाल)

मुक्तिनाथ का नाम शालग्राम-क्षेत्र भी है। भगवान् श्रीहरि यहाँ पर्वतरूप में और भगवान् शङ्कर पर्वतस्थ लिङ्गरूप में स्थित हैं। यहाँ की सारी शिलाएँ भगवत्स्वरूप हैं, फिर चक्राङ्कितों का तो पूछना ही क्या। यहाँ पहले पुलह तथा पुलस्त्य ऋषियों का आश्रम था। सोमेश्वर लिङ्ग तथा रावण द्वारा प्रकट की हुई बाणगङ्गा की पवित्र धारा भी यहाँ है। यही नहीं, देविका, गण्डकी तथा चक्रा नदियों के संगम से यहाँ त्रिवेणी बन गयी है। राजर्षि भरत ने भी राज-पाट छोड़कर यहीं तपस्या की थी। दूसरे जन्म में जब वे कालंजर में मृग हुए, उस समय भी अपनी माता तथा मृग-यूथ को छोड़कर मृग शरीर से यहीं आ गये। वाराहपुराण के अनुसार किसी काल में गज-ग्राह का युद्ध भी यहीं हुआ था तथा भगवान् ने सुदर्शन चक्र से ग्राह का मुख विदीर्ण करके गजराज का उद्धार किया था। यहाँ और कई तीर्थ हैं-जिनमें हरिहरप्रभ, हंसतीर्थ और यक्षतीर्थ मुख्य हैं। यहाँ जो त्रिधार-त्रिवेणी में स्नान करके देवता तथा पितरों का तर्पण करता है तथा भगवान् शङ्कर की पूजा करता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता-

तीर्थे त्रिधारे यः स्नात्वा संतर्प्य पितृदेवताः।
महायोगिनमभ्यर्च्य न भूयो जन्मभाग् भवेत्।। (वाराह. 144/172)

पशुपतिनाथ की यात्रा किसी भी समय की जा सकती है। केवल दिसंबर-जनवरी में वहाँ अधिक शीत पड़ती है। भारतीय यात्री प्रायः शिवरात्रि के अवसर पर जाते हैं।

मुक्तिनाथ की यात्रा चैत्र शुक्ल से कार्तिक कृष्णतक की जा सकती है। और दामोदर कुण्ड तो मुक्तिनाथ से आगे है। वहाँ जाना हो तो मुक्तिनाथ की यात्रा अगस्त-सितंबर में करना उत्तम है; क्योंकि जून-जुलाई में उधर वर्षा या बरफ के पिघलने के उपद्रव रहते हैं। जून के पहले वहाँ का मार्ग खुला नहीं रहता और सितंबर के बाद हिमपात का भय रहता है।

पशुपतिनाथ की यात्रा के लिये तो कोई विशेष सामान नहीं चाहिये। शिवरात्रि के अवसर पर यात्रा करनेवालों को गरम कपड़े, कम्बल तथा स्वयं भोजन बनाना हो तो भोजन के पात्र ले जाना चाहिये। वैसे मार्ग में बाजार मिलते रहते हैं, कोई कठिनाई नहीं होती।

मुक्तिनाथ तथा दामोदरकुण्ड की यात्रा करनेवालों को दो अच्छे कम्बल, कुछ मिश्री, काली मिर्च, थोड़ी खटाई, मोमबत्ती, टार्च, भोजन बनाने का बर्तन(हलका) साथ रखना चाहिये। मुक्तिनाथतक चावल, दाल, आटा आदि मिलता रहेगा। मुक्तिनाथ से आगे दामोदरकुण्ड जाना हो तो 3-4 दिन के लिये चावल आदि साथ ले जाना पड़ता है।

पशुपतिनाथ

बिहार-प्रदेश में पूर्वोत्तर रेलवे का स्टेशन रक्सौल है, समस्तीपुर-दरभंगा होकर या नरकटियागंज होकर रक्सौल जाया जा सकता है। भारतीय रेलवे स्टेशन रक्सौल से लगभग एक फर्लांग दूर नेपाल-सरकार-रेलवे का स्टेशन है। वहाँ नेपाल-सरकार-रेलवे में बैठना पड़ता है। यह ट्रेन केवल 29 मील अमलेखगंजतक जाती है।

अमलेख-गंज से भीमफेड़ी बाजार 27 मील दूर है। वहाँ तक मोटर-बसें जाती हैं। भीमफेड़ी से थान-कोट स्थान 17 मील दूर है। यह पैदल का रास्ता है। इसमें कठिन चढाई-उतराई पड़ती है; किंतु बीच में दो पड़ाव के स्थान हैं। रास्ते में दूकानें मिलती हैं। थान-कोट से काठमंडू 6 मील है। पक्की सड़क है। लारियाँ तथा टैक्सियाँ मिलती हैं। काठमंडू से लगभग दो मील पर पशुपतिनाथजी का मन्दिर है। आजकल रक्सौल से काठमण्डूतक बसें मिलती हैं। पुनः वाराणसी तथा गोरखपुर से भी काठमण्डू के लिये बसें मिल सकती हैं।

काठमंडू नगर विष्णुमती और बागमती नामक नदियों के संगम पर बसा है। इनमें से बागमती नदी के तट पर नेपाल के रक्षक मछंदरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) का मन्दिर है। पशुपतिनाथ का मन्दिर विष्णुमती नदी के तट पर है। यात्री विष्णुमती में स्नान करके दर्शन करने जाते हैं।

लोक में यह बात फैली है कि पशुपतिनाथ की मूर्त्ति पारस की है; किंतु यह भ्रममात्र है। यह पञ्चमुख शिवलिङ्ग है, जो भगवान् शङ्कर की अष्टतत्त्व-मूर्त्तियों में एक (यजमानमूर्त्ति) माना जाता है। महिषरूपधारी भगवान् शिव का यह शिरोभाग है। पास ही एक मण्डप में नन्दी की मूर्त्ति है। पशुपतिनाथ के मन्दिर के समीप ही देवी का विशाल मन्दिर है। पशुपतिनाथ मन्दिर से थोड़ी ही दूर पर गुह्येश्वरी देवी का मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल और भव्य है। यह 51 शक्तिपीठों में है। सती के दोनों जानु यहाँ गिरे थे।

यात्रियों के ठहरने के लिये पशुपतिनाथ में कई धर्मशालाएँ हैं। अब तो मुजफ्फरपुर से काठमंडू को हवाई जहाज भी जाते हैं। देश के अन्य भागों से भी वहाँ हवाई जहाज जाते हैं।

मुक्तिनाथ

मुक्तिनाथ काठमंडू से 140 मील है। यहाँ आने के लिये गोरखपुर से भी एक मार्ग है। काठमंडू से हवाई जहाज अथवा बस-टैक्सी द्वारा पोखरा आना पड़ता है। यदि गोरखपुर की तरफ से आना हो तो गोरखपुर से नौतनवाँ ट्रेन से और नौतनवाँ से भैरवहा (अथवा भैरवा) मोटर से आकर भैरवहा से पोखरा हवाई जहाज या मोटर-टैक्सी से जा सकते हैं। गोरखपुर से सीधे भैरवहातक मोटर-बसें भी आती हैं। यदि हवाई जहाज से यात्रा न करना हो तो गोरखपुर से भैरवहा मोटर से, भैरवहा से बुटवल

मोटर से और वहाँ से पैदल यात्रा पालपा तथा बागतुंग होकर करना पड़ता है। इस मार्ग से मुक्तिनाथतक पैदल 64 मील चलना पड़ता है। मुक्तिनाथ में ठहरने के लिये धर्मशाला भी है।

पोखरासे मुक्तिनाथ

पोखरा से नागडोडा – 7 मील

नागडोडा से घोरे पानी – 9 मील

घोरे पानी से दानभंसार – 9 मील

दानभंसार से टुकचे बाज़ार – 11 मील

टुकचे बाज़ार से मुक्तिनाथ – 12 मील

इस पैदल मार्ग में धर्मशाला नहीं है। दूकानदारों के यहाँ ठहरने की सुविधा प्राप्त हो जाती है। मुक्तिनाथ पहुँचने से पूर्व ही कागबेनी–तीर्थ मिलता है। आजकल गोरखपुर से पोखरातक बसें भी मिलती हैं। मुक्तिनाथ जाने के लिये भी पोखरा से साधन उपलब्ध हैं।

मुक्तिनाथ शालग्रामक्षेत्र है। दानभंसार से गण्डकी के पुलिन पर और मार्ग के समीप के पर्वत पर शालग्रामशिला का मिलना प्रारम्भ हो जाता है। गण्डकी नदी का उद्‌गम तो दामोदर कुण्ड है; किंतु उसके किनारे जहाँतक शालग्राम पर्वत का विस्तार है वह पूरा क्षेत्र शालग्रामक्षेत्र है। इस क्षेत्र में शालग्राम के अनेक रूप पाये जाते हैं। रंग, आकार, चक्र तथा मुखादि के भेद से शालग्रामशिला हरि, विष्णु, कृष्ण, राम, नृसिंह आदि मानी जाती है।

गण्डकी नदी को नारायणी या शालग्रामी भी कहते हैं। मुक्तिनाथ के अन्तर्गत नारायणी नदी में गरम पानी के सात झरने हैं, इनमें से अग्निकुण्ड नामक झरना एक पर्वत से निकलता है। उसके उद्‌गम के पास पर्वत में अग्निज्वालाएँ दीखती हैं। मुक्तिनाथ में कई देवमन्दिर हैं तथा मुक्तिनाथ 51 शाक्तिपीठों में एक पीठ है। यहाँ सती का दाहिना गण्डस्थल गिरा था।

दामोदरकुण्ड

मुक्तिनाथ से दामोदर कुण्ड 16 मील है। आगे कोई मार्ग नहीं बना है। टुकचे बाजार से मार्ग–दर्शक, कुली, भोजन–सामान तथा तंबू ले जाना चाहिये; क्योंकि बरफ पर अनुमान से ही चलना पड़ता है। पहले नकली दामोदरकुण्ड मिलता है। और आगे जाने पर असली(शुद्ध) दामोदरकुण्ड प्राप्त होता है। नेपाल के लोगों की धारणा है कि दामोदरकुण्ड से सजीव(अत्यन्त प्रभावशाली) शालग्राम पाये जा सकते हैं, किंतु अत्यन्त कठिन मार्ग तथा बहुत शीत होने से वहाँतक की यात्रा कम ही लोग करते हैं।

(यह लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के तीर्थांक पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁